

Aug. 21. 1949. 9. 6. 1949

मंत्र-तंत्र-यंत्र



Pat. M. 1949

Pat. M. 1949

आधिक उन्नति

एवं समस्त रोग, शोक, दुःख, वारित्त्य निवारण के लिए

इस बार

शरद पूर्णिमा प्रयोग सम्पन्न करके देख लीजिये न !

सभी वृद्धों की गति भिन्न प्रकार की होती है, और सभी यह बातों अलग-अलग प्रकार आप पर बोलते हैं, इन वृद्धों के प्रभावस्वरूप ही आपके जीवन की एक धारा निर्धारित होती है, लेकिन इसके बावजूद भी ऐसा नहीं होता है, कि किसी दिन ही आप विशेष पसन्द रखते हैं, और किसी दिन बिना कोई विशेष कारण के एक उपासी ली रहती है, कोई काम करने की इच्छा ही नहीं होती, और कभी-कभी विशेष चिड़चिड़ापन भी जाता है।

यह विशेष प्रभाव पुरुषों और स्त्रियों दोनों पर होता है, लेकिन यह देखने में आया है, कि स्त्रियाँ विशेष प्रभावित होती हैं, और उनके दैनिक आचरण में परिवर्तन सीधे होते हैं, यह स्थिति आप ने अपने घरों में भी अनुभव की होगी।

यहाँ तक वृद्धों का सम्बन्ध है, काँदें यह तेज गति से प्रगल्भ करता है, ही कोई भी गति से और जल्दी गति के अनुरूप भाव पर प्रभाव पड़ता है, बुरे एक मास में राशि परिवर्तन करता है, ही गति कई वर्ष में राशि परिवर्तन करता है, यही उसे गोबर प्रभाव कहलाता है।

जन्ममा पुरुषों का सबसे मजबूत यह होने के कारण यह स्थिति प्रभाव सभी व्यक्तियों पर यहाँ तक पशु-पक्षियों तथा ननस्पतियों पर भी विशेष रूप से पड़ता है, और यह एक राशि से दूसरी राशि में कई दिन में ही परिवर्तन कर लेता है, जन्ममा ही मनुष्य के स्वभाव को नियंत्रित करता है, इसके साथ ही यह यह सौम्यता, भावना, प्रकृति, सुन्दरता, वास्तविकता का कारण यह है।

शरद पूर्णिमा

शरदिन रात की राति साधना का पर्व माना जाता है, और इस मास, शरद की पूर्णिमा के पश्चात् गवर्गि आरम्भ होती है, विजयदशमी का महापर्व आता है, दूसरी ओर शरदिन मास लक्ष्मी, जो कि जीवन में सौभाग्य, धैर्यता, ओ शक्ति प्रदान करने वाली, लक्ष्मी के विभिन्न पर्व वन-अयोध्या, रूपनन्दन, दीपावली का मास है, इन दोनों महापर्वों के महा मासों के साथ साथ में एक विशेष पर्व आता है, और यह महापर्व शरद पूर्णिमा का पर्व है, इस पर्व यह शरद पूर्णिमा पर्व २-१०-६० को है।

अहोभाव-महोत्सव

नवरात्रि-पर्व

१६-२-६० - २०-६-६०

नवरात्रि पर्व, जीवन के संचित पुण्यों का समग्र सौभाग्यशाली पर्व, एक ऐसा महोत्सव, जो इस बार विशेष रूप से सम्पन्न किया जा रहा है।

आप अपनी श्रद्धा एवं मन्त्र के बल पर नवरात्रि में भगवती जगदम्बा को प्रत्यक्ष प्रगट करते हुए उसके प्रति अहोभाव प्रदर्शित करें।

नृत्य, संगीत, मधुरता एवं गुरुदेव के साक्षिभ्य में दुर्लभ महोत्सव। साधना, सिद्धि एवं प्रसन्नता के सागर में गुरुदेव के साथ चिन्तन करने का अद्वितीय अवसर।

आपको-तो हृदय से निमन्त्रण।

यह साधना पर्व है, अहोभाव महोत्सव है, अतः ये ही साधक पाने का कष्ट करें, जो साधना शुल्क बेते हुए साधना शिविर में भाग लें, स्वयं में घूमने, देखने, या समग्र बरकाद करने के लिए इस महोत्सव में जाना अनिवार्य है।

क्योंकि इस महोत्सव में कई विशेष प्रयोग सम्पन्न हो रहे हैं।

जान
कितने
दिन
और

कि
यह

कैसे
हो

पर
प्रती
है

किस
रूप
में
हो
गा

संकल्प शक्ति के यन्त्री
अपनी जमान के पक्के

उन सदस्यों के नाम, जिन्होंने ऑफसेट मशीन के लिए वामदे
के मुताबिक धनराशि भेज दी।

● सज्जन सिंह सिवाच	:	संभरण
● जयेश एस. बेसाई	:	बलसाह
● गवोन्ध कुमार सक्सेना	:	प्रागरा
● श्रीमती प्रवीणा मणसूदार	:	देवलाही
● कुमारी ऊषा पासलकर	:	धार
● एन. एस. मजसूदार	:	देवलाही
● विनोद कुमार	:	दिल्ली
● विजय श्याम	:	बड़ौदा
● महावीर प्रसाद दुबे	:	भांसी
● चन्द्रभान धारीवाल	:	बिल्लो
● चन्द्र प्रकाश सोनी	:	नरसिंह गढ़
● रामकृष्ण जायसवाल	:	रीवा
● श्रीमती शीत गुलिवा	:	रोहतक
● देवशी भाई गोरधन भाई सबानी	:	सुरत
● प्रेम कुमार कम्बोज	:	रायबरेली
● के. के. धाड़से	:	भाऊनेर
● गोविन्द डाबो	:	पना
● बल्लस उषाध्याय	:	अलीगढ़
● राजेन्द्र सिंह	:	हावड़ा
● शशिपाल सैनी	:	साहस्रद मरकण्डा

१ डॉ० कलूभाई पटेल	- बम्बई	२ राजकृष्ण भास्कर	- सरगुजा
३ मेहोलाज जाधवराव	- मद्रास	४ प्रवीण कोशी	- बड़ौदा
५ भुराराम	- पोसासिया	६ हरिश्चंद्र श्रीवास्तव	- जितपुरी
७ धरमचंद कुमर श्रीवास्तव	- बिजनपुर	८ धर्मचंद	- दिल्ली
९ श्री यमजी भाई	- पूरत	१० कमरंज लर्वा	- मारी
११ प्रमोद कुमार गुप्ता	- पुणे	१२ दुख जी भाई जी. पटेल	- उदय नगर
१३ चतुर्नाथराव	- भाद	१४ श्री. एल. श्री	- मुना
१५ जवाहर लाल साहू	- बल्लार पण्डित	१६ श्री. ज.	- चमोट
१७ श्रीमन्मोहन मिश्र	- आबमवट	१८ धर्मोद्दामभाई प्रजापत	- बम्बई
१९ श्रीमतीं साठा कुमरिया	- बम्बई	२० सुभाष चंद	- मारी
२१ जयल एम० पटेल	- बम्बई	२२ कनकराव	- धारा

२३ यह सुची १९५४-५५ तक की है, ऐसा सूची अपने अंत में सम्मिलित की है।

पुनः पुष्टि कर निश्चय हुआ था, कि एक सूची के भीतर-भीतर अनुराजि भेज दे, जिसके समय पर ऑफिसर सजीव को आर्डर दिया जा सके।

हमें विश्वास है, कि पूरे भारतवर्ष के राक्षसों के सामने मशीन हेतु जो एनाउन्स किया है, उससे सम्मिलित राशि यह प्रक्रिया आगे होने ही मिलवा देगे, जिससे उनका शुभ नाम प्रकाशित किया जा सके, और सम्मिलित प्रश्न भेजा जा सके।

उक्त !

अपने अंत में उन सदस्यों के नाम भी प्रकाशित होंगे, जिन्होंने एनाउन्स की किया, पर सम्मिलित अनुराजि भेजी नहीं है।

यह उनके लिए पूरे भारतवर्ष के राक्षसों के सामने कितनी प्रसन्नताक बात होगी ?

निखिलेश्वरानंद-स्तवन

एक पवित्र, दि०य और अद्वितीय ग्रंथ

जो सभी-सभी प्रकाशित हुआ है

मूल्य-बारह रुपये (सागत मात्र)

- आप साधक हैं, और इससे भी बड़कर आप परम पूज्य गुरुदेव के प्रिय शिष्य हैं, आपके घर में तो यह साध रहना ही चाहिये।
- पर सच्चे शिष्य का फसल्य नहीं समाप्त वहीं हो जाता, आप समर्थ हैं, प्रत्येक शिष्य इसको कम से कम पांच प्रतिमां तो संथाएँ ही, और अन्य लोगों को निःशुल्क वितरित कर दें।
- यह गुरु ऋण चुकाने की प्रक्रिया है, सही शिष्य कहलाने का गौरवमय अंग है, पूज्य गुरुदेव की आज्ञा है।
- वगैरेशि सभी मत भेजिये, यह संकल्प पत्र भर कर भेज दीजिये, धी०पी० आने पर पोस्टमेन को अनुराधि दे कर पुस्तक छुड़वा लें।

संकल्प-प्रपत्र

मैं पूज्य गुरुदेव का प्रिय शिष्य हूँ, और उनकी आज्ञा अविरोध है, मैं 'निखिलेश्वरानंद-स्तवन' की (यहाँ संख्या लिखिये) की प्रतिमां मुझे एक सप्ताह में भेज दी जाये, मैं भी जो छुड़ाई का वायदा करता हूँ।

मेरा पूरा नाम

मेरा पूरा पता

हस्ताक्षर

अंगक-१६६०

सुखायै नमः

4

सुखमयम्—

आवृत्ति १४३५०१ (राज०)

हेल्सोक्टोन । १९५०-५१

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं पर अधिकार प्रमाणिका है, प्रमाणिका लहरी एवं कामधेनिका शुल्क १९२/रु., एक वर्ष का २९/रु., तथा एक वर्ष का शुल्क ८/रु. है। पत्रिका में प्रकाशित पत्रों से सम्बन्धित सब सहायक होना अनिवार्य नहीं है। लहरी-कुर्क के समस्त पत्रों पर लहरी, प्रमाणिका में प्रकाशित सम्पूर्ण को स्पष्ट समझें, किसी स्थिति, नाम या प्रकाशक का किसी भी प्रकार संबंध नहीं है, यदि कोई बदमाश, चालाक या गलत मित्र शक तो इस संबंध समझें। पत्रिका के लेखक पुनरावृत्त नाम सहा होतें हैं तथा उनके जो पत्रों के नाम में कुछ भी शक्य मतानुसार वे सब प्रकाश नहीं होगें। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख का सम्पूर्ण के बारे में शक-विश्रब्धता पूर्ण शक्य नहीं होगा और न इसके लिए लिखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेदार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में कोषपुर न्यायालय ही मध्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में अफसत सम्बन्धों क्षति-नाश कादि का जिम्मेवारी साधक को स्वयं की होगी, तथा संभव कोई ऐसी उपायन बन वा अन्य प्रयोग न करें, जो वैज्ञानिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विरुद्ध हो। पत्रिका में प्रकाशित एवं विस्तारित सम्पूर्ण के संबंध में किसी भी प्रकार की शक्यता या आलोचना स्वीकार नहीं होगी, पत्रिका में प्रकाशित आनुवंशिक वैज्ञानिकों एवं नवोप जन्म की सम्बन्धों पर ही करें, किसी सम्बन्धों लेखकों के साथ निन्दा शुरू है, उन पर शक्य सब अवसर पत्रिका में सम्बन्धितों की तरफ से होगा है। पत्रिका में प्रकाशित लेख पुनरावृत्त में ही सम्बन्धितों की सम्बन्धों या सम्बन्धितों के नाम में प्रकाशित पत्रों या लहरी है, इन सम्बन्धों या प्रकाशित पत्रों पर प्रकाशिकार पत्रिका का भी है, सम्बन्धितों के सम्बन्धों का होगा।

श्री० भीमाला भाग. हार्डकोर्ड कोलोमो, सोधपुर-१४२०-१ (प्राप्तगाव)

अहोभाव महोत्सव

नवरात्रि पर्व तो

आ

से सब कुछ प्राप्त कर लेने का

पर्व है

पर आपकी उपस्थिति तो अनिवार्य है न !

अहोभाव का तात्पर्य है, नवरात्रि पर कुछ विशिष्ट विषय और वाचनाएँ, गुरु के सृष्टि में सुलभा होने वाले कार्यान्वित करण, अहोभाव का तात्पर्य है, कि जब तक जीवन में वो कुछ हम प्राप्त नहीं कर सके हैं, न तो सब एका ही जगह से प्राप्त कर लेना, अहोभाव का तात्पर्य है, अपने जीवन की पूर्णता को और अधिकतर तक लेना और वह सब कुछ प्राप्त कर लेना जो हमारे जीवन में स्थित है, जो हमारे जीवन में कबित है, और अिनसी बचत में हम परेशानी, शंका, चिन्ता और कठिनाइयाँ हैं।

इसलिए जो इस बार एक विशिष्ट संकेत उदाहरण है, एक विशेष बातें मुना है, "अहोभाव महोत्सव" के रूप में नवरात्रि इसे ही मानते हैं। जो विचारों और वाक्यांशों के माध्यम से तबला करना, कि विचार हम एक ही बात हैं अपने जीवन की वाक्यांशों को समझना और तब, और अपने जीवन की सभी चीजों में पूर्णता और उत्कृष्टता प्रदान कर सकें।

संकोच

इस बार गुरु पूर्णिमा अवसर पर हम सभी उपस्थित और अनुपस्थित साधकों और शिष्यों ने एक ही प्रतीक्षा की थी, कि इस बार हम में से प्रत्येक साधक और शिष्य अपने साथ पंच तपे सामक से कर इस अहोभाव महोत्सव में भाग लेगा।

और हम अपने वसन्ती पर, गुरु के सामने ली हुई शपथ पर खड़े हैं, और इसी संघर्ष के साथ अहोरात्रि महोत्सव (नवरात्रि मिवर) में भाग लेने आ रहे हैं।

पर हमने फिर यह तो कहा ही है, कि आप इस महोत्सव में भागीभूत हों, प्राचीन कुछ विशेष शिवाए, साधनाएँ या उपवास करने की आवश्यकता नहीं है, आपकी तो केवल उपस्थिति ही है, जिससे कि यह महोत्सव महोत्सव में सुखी या लगे और जब मैं उपवास प्रदान करने के लिए उपस्थित हूँ तब आप उससे लाभने उपस्थित दिखाई दें, सब बात साधीभूत हों, तब आप राशन के लिए माँ साधना के समयमें प्रत्यक्ष हों।

और हमने फिर कहकर है, वन होंगे भी, विनोद और मधुर होने की, इस महोत्सव में भागीभूत होने की, और सर्वथा रिक्त होने की, क्योंकि जो रिक्त है, उसके को तो भरा जा सकता है, तो पहले से ही वन, छल, कपट और रंज के बंधा हुआ है, उसे और मरवा दिया तो क्या जा सकता है, नवाचन पड़े हुए जिसे मैं लेने की एक हथ भी नहीं दाखिल आ सकती, कुछ ही प्रश्न और दृष्टिकोण से मरे हुए साधकों को मैं पादमाला कुछ देना भी चाहूँ, यदि कुछ प्रदान करना भी चाहूँ, तो वेही प्रदान करेगी ?

इसीलिए तो मैं कहता हूँ, कि इस बार जो भी उपवास किंचित लीक और रंजित से दूरकर है, इस बार तो नवरात्रि के अपने आप

महोभावाव महोत्सव का साधक जीवन में जो कुछ करी है, जो कुछ स्थान है, उसे एक ही बार में समाप्त कर देना है, और माँ के चरणों में अर्पण कर उसके आदेश दर्शन करना, तथा माँ भुवाओं से वह जो कुछ प्रदान करे उसे प्राप्त करना।

वन, शैल, पहा, पर्वत, प्रतिष्ठा, स्थापत्य आदि सब कुछ प्राप्त करने के पर्व तो ही "महोभावाव महोत्सव" कहा जाता है, क्योंकि यह सर्वथा नवीन पद्धति में सम्पन्न किया जा रहा है, जिससे कि यदि आप सम्पन्न हैं, यदि आप माँ के प्रति अर्पण युक्त हैं तो सब कुछ एक ही बार में प्राप्त कर सकते हैं।

मैं समझ रहा हूँ, इस बार दुकटें इस पर्व को सम्पन्न करने के लिए हैं नहीं, क्योंकि "महोभावाव महोत्सव" के रूप में सम्पन्न करने जा रहे हैं, पर इस महोभावाव महोत्सव में आपकी उपस्थिति अनिवार्य है, क्योंकि आप ही शायद हैं, और जो उपवास, जो कुछ प्रदान करेगी, वह आपको प्राप्त करेगा है, ऐसा न ही कि माँ जगदम्बा माँ की सभी भुवाओं से आपकी सब कुछ प्रदान करेगा वह और माँ उपस्थित न हों, माँ अपने ही हैं के जानकी पुकारे, और आप भक्तिसिद्ध हों, माँ आपको अर्पण करके पुनः और माँ दिखाई दे न दें।

और उसके लिए कोई विशेष तैयारी की आवश्यकता नहीं है, उपवास है साधक की, जो इस हीतमें और हिम्मत के साथ साधक के रूप में इस महोत्सव में भाग लें, कि मैं सब कुछ प्राप्त करना चाहूँ, मैं तो साधक १२ दुर्गा देव, सब माँ भोवती दुर्गाओं से बन दें, सब सुखें सब सब प्राप्त कर दें, जो कि वेही इच्छाएँ हैं, वन, शैल, पहा, पर्वत, पर्व, पर्व, माँ, दुर्गा, दुर्गा, दुर्गा, दुर्गा, दुर्गा और भुवाओं से, वह सब कुछ प्राप्त करने ही है, सब प्राप्त है, आपकी सब होने की सम्पत्ति है, आपकी साधना होने की सम्पत्ति है, आपकी महोत्सव होने की है।

महोभावाव महोत्सव और, साधक या धर्म, फिरने का पर्व नहीं है, केवल वही व्यक्ति या साधक उपस्थित हों जो शिविर में भाग लेते हों, जो शिविर में भाग नहीं ले रहे हों उन्हें कष्ट उठाने की आवश्यकता नहीं है, उन्हें यहां जाने की और भोड़ में शामिल होने की आवश्यकता नहीं है।

आता हूँ तो नियमों का पालन करते हुए, सम्पन्न और अर्पण के साथ माँ जगदम्बा से सब कुछ प्राप्त करने का भाग लिए हुए, और शिविर में साधक के रूप में अपने आप को प्रस्तुत करते हुए।

इस महोभावाव महोत्सव में केवल ये ही उपस्थित हों, जो शिविर में भाग लेने के आकांक्षी हों।

[illegible][illegible]

इस धरत हन नहीं, जो जगदन्धर स्वयं आगयी आया।
 मैं रही है, अपने बाध चुका रही है, अपने ही परमात्मा में
 समाया होन के लिए तैयार रह रही है। ●

सुख पहले साधक हो, बाद में कुछ और, फिर इस बार तो ज़िन्दगी का सबसे गानदार अवसर आपके पास आ रहा है "महाभाज महोत्सव" के रूप में। तुम्हें साधक और केवल "साधक" के रूप में इस बार भाग लेना ही है।



इस बार हम-सही, माँ जगदम्बा स्वयं
आपकी मायाज दे रही है, प्रपते पास
बुझाने का निमन्त्रण दे रही है, सब कुछ
प्रदान करने का भाव लिए हुए वह जीवन
की संधारने और सजाने के लिए इस द्वार
तैयार है, जरूरत है आपकी नस होने की,
बिगीत होने की, और पूर्ण समर्पण भुक्त
होने की ।

जितना ही ज्यादा सेवा, साधना, श्रद्धा और समर्पण आप में होगा, उतना ही ज्यादा आप सब बुद्ध प्राप्त कर सकेंगे, इस बार भूक भरे वो सही भर्षा में जीवन से मुक्त जायेंगे ।

महोदय महोदय तो मैं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करने का पर्व है, कि जब वह सब कुछ प्रदान करे, तब हम उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकें, जब वह सब कुछ प्रदान करे, तब हम दोनों हाथों से प्राप्त कर सकें, जब वह उपस्थित हो, तब हमें पूर्ण ज्ञान और सम्मान की प्राप्ति हो ।

NY 47-4607-Sub E

सुप्रसन्न

५
८
२
६

2

[illegible]

અનંત સુરેશ ૪-૬-૨૦

असतत सिद्धियों को प्रशंग्य सम्भव है

अनंत सिद्धि प्रयोग

५

मित्रों को प्रेरणा प्रदान करने वाला है। उन्होंने विचारों के माध्यम से समाज को एक ही धार पर एकत्रित करने का प्रयास किया है। उन्होंने समाज के अनेक क्षेत्रों में सुधार लाने का प्रयास किया है। उन्होंने समाज के अनेक क्षेत्रों में सुधार लाने का प्रयास किया है।

श्री विष्णु जी परमात्मा की परमात्मा हैं। उनके अन्तर
मूर्ति के अन्तरमूर्ति के अन्तरमूर्ति हैं। अन्तर
मूर्ति के अन्तरमूर्ति के अन्तरमूर्ति हैं। अन्तर

निष्ठा की दायिर्ग साचनः मिश्रण हो सकी हो एत

ध्वनन्तु साधना - पुष्पता र्द्धि साधना

[illegible]

आठ दिनांक ६ ६ ६ ६

पूर्वजों और पितरों का

अनुभव

जीवन का आवश्यक धर्म है

और वह अनुभव

इस साधना से पुकारा जा सकता है

यह जो कुछ प्रत्यक्ष है, वह है, कि मनुष्य ही जीवन का साधक नहीं है, बल्कि पुरुष ही एक ऐसा जीवन है, जो कि इस भौतिक जीवन में प्रत्यक्ष मनुष्य, प्रभावकारी एवं सामाजिक नियंत्रण में है। जीवन जीवन में लोकात्मक और सामाजिक नियंत्रण में है, वह ही है, जो कि जीवन में लोकात्मक और सामाजिक नियंत्रण में है।

इस प्रकार जीवन प्रत्यक्ष ही है, जो कि जीवन में लोकात्मक और सामाजिक नियंत्रण में है, वह ही है, जो कि जीवन में लोकात्मक और सामाजिक नियंत्रण में है।

यह जीवन ही है, जो कि जीवन में लोकात्मक और सामाजिक नियंत्रण में है, वह ही है, जो कि जीवन में लोकात्मक और सामाजिक नियंत्रण में है।

महर्षिः हि अस्ति कोऽपि भवतु भण्ड्य मनुजाने का प्रपास का
स्वा हे त्वा इम धर दोन नैके लगाई पाए

यहाँ तक सड़कियाँ एवं बिना श्रमिकों के सम्भार वि-
गन गाँव में मचने लगी। सड़कियों में मालवा, दूध ल-
दी लगाया गया है, बुक इत्यादि बिना की खरीद जल्दी उपलब्धि
की हो मार्ग प्रशस्त हुआ है। कुछ के संरक्षण में आकर तथा।
मुझे मन-से नहीं कोई भी श्रम-भक्ति विचार नहीं हो
सकती।

पूछ के दरबान संभव वरुन मंतकीनी परिकार हो, यों
परिचर में भी जी पुरेन हू, कतेक दरजन लखन है,
कीजिं जूते सूर अमन से काने धार मज बेल, कपडू
मल दिगीअभय ही कबलन है केजिं पंगु न
सुख पालनिके निर्धारन तमलन है यानी कि किम
पकर एक निज तबैक पही बलनन है कि इसका पुन
मनके अनेक सीम मनें लसी प्रकार हाने बुनें पही
गाने है कि इसकी संतान परने जीमन में सुधूक कपल
दुगे ही

[illegible]

कचुबंद में कचुर यथा है कि विद्वत्तं का उद्धारणं यथा
नमनं रत्नं पुरं निमग्नं तु है, अथवे ज्योतिषं के यथा कागं
मं भाषो यथा, उषां अथवे कचुबंद, यथा, उषां निमग्नं
तु कागं रत्नं

नितरेश्वरों की शक्ति

[illegible]

पितृप्रेषणं साधनम्।

प्रमं सम्पन्न स्वं प्राप्त्य मे क्षेमं रक्षणे वा। प्रत्येक
व्यक्ति अपने जीवन में कोई भी बड़ा बुद्धिमान प्रारम्भ करने
से पहले अपने पूर्वज पितामहों की आज्ञा अवश्य करता
है, किन्तु वह शिष्टी ही पूर्ण नहीं है, उन्हें पूर्ण रूप से
सम्पूर्ण अनुभव बना कर अवश्यक क्षमों में सम्पूर्ण प्राप्त
करने के लिए पितामह सम्पन्न की आवश्यकता रहती है, सम्पन्न
= ज्ञान और विचारों की हर क्षमों में अनुभव की
ज्ञान प्राप्त है, इस समय सभी को यदि एक विशेष प्रकार
की प्रज्ञा है, अतएव मे गारा-समस्तों का एक विशेष
समय बनता है, और यह सिद्ध है कि यह है कि इस समय
पूर्वज पितामह सम्पन्न की प्रज्ञा से ही प्रज्ञा की प्रज्ञा
प्रज्ञा से ही विचार करने में, यदि इस समय कोई सम्पन्न

ॐ नमः

इसमें नवरात्र एवं माघा के पितृपक्ष तीसरे अंश का पत्र है। इस माघमा में जो मात्रा प्रयोग में आई है वह किसी दूसरे संध्या में प्रयोग नहीं की जा सकती है। इस बात का ध्यान रखना विशेष आवश्यक है।

॥ ॐ सर्वे भित्तु ॥ प्रसन्नो नमः ॐ ॥

इहोपाधिर्न तैत्तिरीयस्य पाण्यात्मकः पूर्यमाणोऽप्यतः
 पितृशिवरायाभक्तयोग्यः ध्यात्वा उभयम् शरी-
 रसंनिभः सुवेद्यः सर्वशक्तिसमन्विताः पितृ भवराजं
 प्राप्नुवन् स्वस्वार्थं प्राप्नुयंतः ॥

इस प्रकार प्रमाणित पुस्तक विद्यालय में पाये गये
 तो वे सामान्य रूप कठोर ही हैं। वे आकाश विषय
 पुस्तकें हैं। तो वे अच्छी सामग्री नहीं हैं। वे बिल्कुल
 निर्दिष्ट नहीं हैं। वे परीक्षा में उपयोगी नहीं हैं।

[illegible]

ता में
स्वति
श्रव ने

अप
जाए
गे है।

वित्त
पर

प्रत्य
स्वयं
कर

रण
सह-
कार
करता
है
रही

अब मनोकामनाएं

अवश्य पूर्ण हो सकेंगी—

कुछ सरल सर्वोत्तम साधनाओं से

व्यक्ति का जीवन दृष्ट्याओं एवं मनोकामनाओं से परि-
पूर्ण रहता है और प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उसकी
सभी दृष्ट्याएं पूर्ण हो जाएं व्यक्ति जीवन में निरन्तर दृष्ट्याएं
आती रहती हैं, उसे हर वक्त संघर्ष करना पड़ता है

वर्तमान के राज्य-राज्य व्यवस्था में न्याय है जिससे
व्यक्ति अपनी जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर जीवन का
आनन्द प्राप्त कर सकता है।

कुछ निराशतापूर्ण शक्तों के प्रयोग से व्यक्ति को का-
फी है, जो कि नियंत्रण ही व्यक्ति के हस्तों पर एक के लिए
अत्यन्त उपयोगी है।

जहाँ जीवन संघर्षशील है, वहीं समस्या में अपनी
दृष्ट्याएं एवं मनोकामनाएं सफल रहती हैं, वहीं नहीं
पावने में दिखता है, तो वहीं सफलता प्राप्त होती है, एक
दूसरे पर निर्भर होने के कारण ही व्यक्ति को जीवन में
सफल रहनी है, दृष्ट्याओं को पूर्ण करने जीवन का सफल
माना जाता है। एक सफल व्यक्ति ही अपने घर, दूसरे

सफल को ही सफलता मिलती है, व्यक्ति एवं अन्य को सफल देना ही
सही कर्मत्व है।

आपकी उक्ति एवं अपनी व्यवस्था के अनुसार व्यक्ति
निर्धारित कर दृष्ट्याओं की पूर्णता प्राप्त है, व्यक्ति को
आप-निर्धारित निर्धारित दृष्ट्याओं के कारण ही सफल

२०॥ श्री गुरुं नमो नो पतते ह, श्रीर न्यासो का शंकर
मिरासा ये नंद उठता है :

[illegible][illegible]

१- व्यापार उन्नति साधना

हो अर्थात् जगन्मान से जगा रहता है उस हर पक्ष
"नमः" अक्षरक नमो रहती है, यही राजधर्म ब्रह्म की
शक्ति का विज्ञान तो कर्मों से ही जगत् ब्रह्म ब्रह्म प्रतीति
जिन्हें जगत्मा वा तो धर्मधार में अर्थात् नहीं हो पाती या
अर्थात् पदमे अक्षरक है ।

[illegible]

封端

ॐ ह्रीं श्रीं लक्ष्मीं नमः भूते
नव संवत् विनायाय व्यापारे धनं दृश्य
पूरय शिवाय नृपय नृपय नमः

॥ अब मैं वहाँ सभ्य अन्तर्गत संवेकलता का संरक्षक हूँ और
नया यः संवेकलता के अन्तर्गत व्यापार पर उच्च प्रभाव
॥ १५० ॥ वहाँ की वस्तु का दूर होना है

२= मनोकामना-सिद्धि साधना।

[illegible]

श्री १०५
हस्तिक
रं प्रति
कवच
ने कार्य
लगा जा
रहू कर
कर रहे
हरे दिन
द्वित
निरन्तर
करके ही

।

है, और
प्र प्रभु

१ हाथक
दुष्टाप हो
माल कर
२ साधना
श हाथक
कर सुद
३ हाथक
हाथक

तो प्रति हेतु "मनोसमस्त प्रति साधना" २० दिन
करे तो बहुतों के लिए और भी अधिक प्रयुक्त है। इस
साधना में पहले मन्त्र तथा बाद साधना होने लगने पर
का ही महत्व है। सर्वप्रथम देखी के सम्पूर्ण माल सुन्दर
सम्पूर्ण कर परिष्कार की तरह सुन्दर कर दिए प्रति निम्न
मन्त्र की दृष्ट मन्त्रों का प्रयोग करें।

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं मानस साधिकायै नमः।

यह मन्त्र मन्त्र मन्त्र ही वाच को एक मात्र सुन्दर
देवी को ध्याना कर दें, मानवी को सुन्दर ही साधना और
साधना सुन्दर ही साधना मानवी साधना करे। इस साधना
में केवल मन्त्र ही "मन्त्र साधना" का ही साधना
निमित्त साधना ही है।

यह साधना साधना ही है। साधना के साधना
साधना सुन्दर ही साधना साधना कर दें, इस साधना
में केवल साधना ही साधना ही साधना ही है। तो साधना
साधना साधना के साधना ही है। साधना साधना ही है।

मुक्तये में मिलने हेतु साधना

यह साधना साधना ही को साधना ही है। साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना

साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना

मन्त्र साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना

मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं मानस साधिकायै नमः।
परमेश्वर करी पद।

यह मन्त्र ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना

साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना

नौकरी प्राप्ति हेतु मुक्तसाधना में साधना

यह साधना साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना
साधना ही साधना ही साधना ही है। साधना ही साधना

यक्ष

सब साधना के रास्ते पर हमारा हाथों, मजबूत
है। हमारे हाथों, मजबूत है। हमारे हाथों, मजबूत है।
हमारे हाथों, मजबूत है। हमारे हाथों, मजबूत है।

जो सफलता अब तक नहीं मिली

वह

सब कुछ इस साधना से मिलेगा ही

प्रत्येक साधक व्यक्ति को एक चरण होना है और उसे चढ़ाई करके पहुँचनी है, वह ऊर्ध्व गति का उसे साधक के द्वारा साध होना है, वह व्यक्ति सामान्य व्यक्ति से भिन्न एक ऐसी विशिष्ट व्यक्ति होता है, जो उच्चता निर्माण चाहता है और उसकी वशता तक पहुँचाने के लिए वह व्यक्ति साधक व्यक्ति न हीकर मानविक व्यक्ति होता है जो उसके चरण के तहत उसे चढ़ाई कर चुकलेली उन्नत करता है, यहाँ और बापू का वह साधना है, वह ध्वज साधना तत्त्व की साधना है, मात्र ध्वज का पुनर्जन्म रूप है और यह विनम्रता का कारण है और विनम्रता की शक्ति कारण होती है, जब व्यक्ति मात्र के लिए अपने विनम्र साधक को साधक नहीं करता वह मात्र मात्र के ही नहीं हो सके न ही वह साधक हो सकेगा है क्योंकि

जो व्यक्ति एक बार हो जाता है, वह कभी नहीं चढ़ाई होती, प्राकृतिक व्यक्ति की वशता और वह वह लड़के मिल कर काम करता है, इन दोनों में भिन्नता सहजता एवं साधकता होगा उसी रूप में व्यक्ति उन्नत होता है और प्रत्येक साधक व्यक्ति का ही महापुरुष रक्षण है ।

सब साधक साधना के वशता ही और साधना ही " तो वह कहता है, "अहं ब्रह्मसिन्धु" अर्थात् की विशेषता है वह है और जो ब्रह्माई नहीं है वह है, जो समुद्र है और विनम्र है, जो व्यक्ति और को साधक है वह में स्वयं है, और वह साधक ब्रह्मा के लक्ष को ही परब्रह्म साधक है

साथ ही ओ ग्रापकी साधनश्रों में सहायक ह

क्षिता प्राथमिक माधमी के छात्राचार्य से विरटि प्राप्त होना संसम्भव है। धार्मिक भावना का योग साधना के एकता का एक सार्वभौम रूप से शुद्ध मनः भक्त चेतन्य प्राथमिक माधमी है।

इस अर्थ में जिन साधनाओं की संस्था किया गया है, उनमें अत्यन्त सरलता का विशेषान्वित वर्तित्वोपस्थित है। आप की जितनी समस्याएँ की गई हैं, उन्हीं को केवल प्रत्यक्ष साधनाओं द्वारा ही हल किया जा सकता है। हम आपकी वह समस्याएँ यहाँ नहीं ला रहे हैं, जो कि बहुत बड़ी, जटिल, अथवा अत्यन्त ही गहन हों। हम आपकी वह समस्याएँ यहाँ नहीं ला रहे हैं, जो कि बहुत बड़ी, जटिल, अथवा अत्यन्त ही गहन हों। हम आपकी वह समस्याएँ यहाँ नहीं ला रहे हैं, जो कि बहुत बड़ी, जटिल, अथवा अत्यन्त ही गहन हों।

संस्थाना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	स्थानांतर
अन्यत्र सिद्धि प्रयोग	६	श्री विष्णु मन्त्रा मंत्र १०८ कमल बीज २१ नाथि लज्जा	२४०) ५० ५० ५० २१५) ५०
विशाल्वर साधना प्रयोग	१३	श्री गणेश मन्त्रा १५ लघु नाथि लज्जा मन्त्रा मन्त्रा	२४०) ५० २५२) ५० २१०) ५०
अन्यत्र सिद्धि साधना		मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा	२४० ५० ५०) ५०
अन्यत्र सिद्धि साधना	१५	मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा	५०) ५० २२० ५०
मुक्तमे मन्त्रा मन्त्रा	१६	मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा	१३०) ५० ५० ५०
लीला मन्त्रा मन्त्रा	१६	मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा	१२० ५० ५० ५०
अन्यत्र सिद्धि प्रयोग	२०	मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा मन्त्रा	२००) ५० ५० ५०

४० : धन-वस्त्र-धन्य विमान

आत्म शक्ति साधना	२६	हस्ता जोडी	११०) ४०
		आत्म शक्ति सिद्धि ग्रन्थ	२४०) ४०
		रोमन्त चक्र	१२०) ४०
		गुणी माना	६०) ४०
पद्म सिद्धि साधना	२८	पद्म राज सिद्धि ग्रन्थ	१०५) ४०
		पद्म माला	१२०) ४०
शारदीय कवचपत्र पूजा	२६	—	—
प्रतिपदा पूजा	२६	कुर्वा चित्र	४) ४०
		गुरु चित्र	२०) ४०
		कुर्वा ग्रन्थ	२४०) ४०
		हस्तिक माना	२०) ४०
द्वितीया-तृतीया पूजा	३३	लघु श्री ग्रन्थ	३५) ४०
		श्री मोरी कंठ	१२०) ४०
		कमलपट्टे की माला	६०) ४०
चतुर्थी-पंचमी पूजा	३३	करस्वामी ग्रन्थ	१२५) ४०
		आठ सिद्धि फल	१२०) ४०
षष्ठी-सप्तमी पूजा	३४	सहाकाली ग्रन्थ	१५०) ४०
		शशि का शक्ति	३०) ४०
		गुरुचक्र	६५) ४०
		काली हकीकत माला	६०) ४०
विश्वकर्मा साधना	३६	वह्ना दण्ड	१२०) ४०
		शक्ति माला	१२०) ४०



शरद पूर्णिमा में दिन का कोई महत्व नहीं है, यह ही जन्म राशि वर्ष है, जिस राशि की चन्द्रमा अपने क्षत्रार्थ प्रभाव के साथ अपनी श्रेष्ठ राशिवा गृहों पर चारों ओर घूमता है, इस राशिवा में जो शक्ति होती है, वह अपने साथ में विशेष प्रभावकारी एवं बहुत फल देने वाली कड़ी ला सकती है, आवश्यकता केवल इस बात की है, कि इस शक्ति को केन्द्रित करके किस प्रकार अपने में समाहित कर लिया जाय।

प्रयोग समय

शरद पूर्णिमा की राशि को विशेष ध्यान करने का सबसे श्रेष्ठ ६ घण्टा कर ३२ मिनट के पश्चात् प्रारम्भ होता है, और यह मुख्य मध्य रात्रि तक है, इस समय के बीच में प्रयोग सम्पन्न करने से सिद्ध प्राप्त होती है।

प्रयोग कैसे करें

प्रयोग शुरू प्रारम्भ होने के पूर्व ही मातृ का दूध ला कर स्वादिष्ट खोर बनाये, पर पूजन से पहले इस खोर को लुका करवा लिये, पूजन प्रारम्भ करने से पहले प्रतिभाषी स्नान कर स्वेत नमक धारण करे, लुके स्थान पर प्रयोग करने पर की चूत पर या कराने में, जहाँ कि चन्द्रमा की किरणें सीधी पड़ सकें, कुछ घास नुछा कर लें, अपने पीछे पीछे उत खोर को एक बड़े पात्र में जो कि पत्र के समान या बड़ी चाबी के समान सुवा हो, डाल दें, अब इस खोर में कुछ घास नुछा, "विष्णु कान्ति चन्द्रमस्तु सुवर्णमहात्म्य" कुछ जल से जो कौर केवल केवल लगा कर खोर में मध्य में डाल दें, पत्र के नीचे स्वास्तिक अक्षर बनाएं, अब अपने गुरु, गुरुदेवता का स्नान करते हुए ५१ बार निम्न मन्त्र का जप करें —

ॐ

॥ ॐ श्री श्री श्री सः चन्द्रमस्यै नमः ॥

इसके पश्चात् इस खोर को उसी स्थान पर अलग-प्रत्येक कटोरी में ले कर परिवार के सभी सदस्य ग्रहण करे, यन्त्र की दूसरे दिन किसी मन्दिर, देवस्थान आदि में अर्पित कर दें।

यह प्रयोग अत्यन्त सरल होते हुए भी बहुत प्रभावकारी है, शरद राशि के इस प्रयोग के फलस्वरूप जहाँ पुरुषों को आर्थिक दृष्टि से अनुकूलता आर्थिक शान्ति, रोग बाधा से पूर्ण निवारण प्राप्त होती है, वहीं स्त्रियों को शारीरिक दृष्टि से पूर्ण समृद्धता एवं सौन्दर्य प्राप्त होता है, जातकी को बुद्धि, ज्ञान, स्मरण-शक्ति प्राप्त होती है।

सह विशेष "विष्णु कान्ति चन्द्रमस्तु सुवर्णमहात्म्य" पञ्चम सदस्यों की श्रेष्ठता की आवश्यकता की जा रही है, इस पर मरीचक (६०) ६० या जाता है, इस प्रकार के केवल ५०१ मन्त्र ही सिद्ध किये जा रहे हैं, इस उचित समय पर मातृ का पत्र घाने पर श्रेष्ठता की आवश्यकता की जा सकती है, अतः समय रहते आवेक लेज है।

रिकार्ड तोड़ नाच

गुरु पूर्णिमा तीहियो कौसेट

उत्तम तकनीक से निर्मित

- इस बार गुरु पूर्णिमा श्रीकारेश्वर में सम्पन्न हुई, और आपने उसमें भाग लिया।
- इस बार इससे सम्बन्धित तीहियो कौसेट अद्वितीय बन पड़ी है, नर्मदा की सहारे, दीपदान, भजनान्तरिका का पूजन, गुरुदेव के प्रसन्न, और आपकी चित्र, आपकी व्यक्तित्व, आपका प्रसन्न अद्वितीय व्यक्तित्व।
- पढ़ीस, शरित्कार में दिखाने योग्य और बाने वाली तीहियों के लिए बरहे।

मूल्य २५०/- रु० [लागत स्पष्ट]

नोट :- आप बिल मिलाकर अपने अधिकार क्षेत्र में, गुरु पूर्णिमा की सी-पी-डी को भेजें।

-: सम्पर्क :-

पत्र-तंत्र-संघ बिज्ञान
सी-१ श्रीगंगा मार्ग, हाई कोड कोलोनी
कोल्लुर - ५४२००१ (राज.)

